05-10-2026 प्रात:मुरली "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम जिसकी आज तक महिमा गाते थे, वही अब तुम्हारे सामने हाज़िर है, इसलिए सदैव खुशी में नाचते रहो, किसी बात का ग़म न हो"

अगर यह पढ़ कर अपने रोमांच खड़े नहीं होते
तो अपनी चेकिंग बहुत गहराई से और First Priority देकर करनी चाहिए (क्योंकि समय बहुत ही थोड़ा सा बचा है)

कहीं तो कुछ नहीं किन्तु बहुत सारी खामियां/कमियां है..
जिसको जल्द से जल्द भरना होगा नहीं तो अंत में खून के आंसू रोना पड़ेगा।
क्योंकि "हाथ को आया और मुंह ना लगा। "- ये वाली अति अति अति पीड़ादायक स्थिति से गुजरना पड़ेगा।

सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।
सारे संसार का सार हमें मिल गया है।

वो पारस मणि हमें मिल गया है,
जिसकी भक्ति में कहानियां सुनते थे।

जिसकी एक झलक मात्र पाने के लिए दुनिया वाले अपना शिर तक उतार कर रख देने को तैयार खड़े हैं।

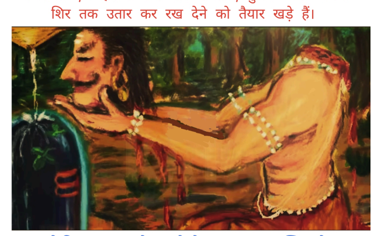

वो विश्वनाथ तुम्हारे सामने सेवक बनकर उपस्थित है।
Please Value this invaluable Time
इसको साधारण नहीं समझो, नहीं तो अंत में खून के आंसू रोना पड़ेगा।

प्रश्नः- पुरुषार्थी बच्चे अपने दिल के अन्दर कौन सी जांच अवश्य करेंगे?

उत्तर:- अभी तक मुझ आत्मा में कोई छोटा-मोटा काँटा तो नहीं है? काम का काँटा सबसे तीखा है। क्रोध का काँटा भी बहुत खराब है। देवतायें क्रोधी नहीं होते इसलिए मीठे बच्चे कोई काँटा हो तो निकाल दो। अपने आपको घाटे में मत डालो।

Direction of The Almighty

गीत:- तुम मात पिता..... Click

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
आ—आ— आ—आ— आ
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
आ—आ— आ—आ— आ
जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

हम जो गीत समझ पाए हैं, वो यहां रखा गया है।
अगर आपके हिसाब से हम गलत है तो कृपया सही गीत का mp3 और lyrics हमें merababa2809@gmail.com पर भेजना जी।

योग धारणा सेवा M.imp.

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वाह रे मैं...

डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने अपने बाप की महिमा सुनी। वह गाते रहते हैं, यहाँ तुम प्रैक्टिकल में उस बाबा का वर्सा ले रहे हो। तुम जानते हो बाबा हमारे द्वारा भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। जिनके द्वारा बना रहे हैं, जरूर वही सुखधाम का मालिक बनेंगे। बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। बाबा की महिमा अपरमअपार है, उससे हम वर्सा पा रहे हैं। अभी तुम बच्चों पर बल्कि सारी दुनिया पर ब्रहस्पति की दशा है। अभी यह तुम ब्राह्मण ही जानते हो। भारत खास और दुनिया आम, सब पर ब्रहस्पति की दशा बैठी है क्योंकि अब 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। इस समय तो कोई कला नहीं है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। ऐसे नहीं यहाँ खुशी है, बाहर जाने से गुम हो जाए। जिसकी महिमा गाते रहते हो वह अब तुम्हारे पास हाज़िर है। बाबा समझाते हैं कि 5 हजार वर्ष पहले भी राजाई देकर गया था। अभी तुम देखेंगे आहिस्ते-आहिस्ते सब पुकारते रहेंगे। तुम्हारे भी स्लोगन निकलते रहेंगे। जैसे कोई कहते हैं एक धर्म हो, एक राजाई हो, एक भाषा हो। वे भी आत्मायें कहती हैं ना। आत्मा जानती है बरोबर भारत में एक राजधानी देवी-

कापारी खुशी

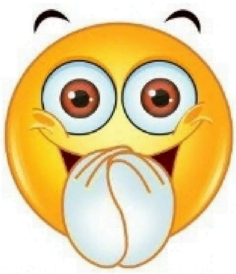

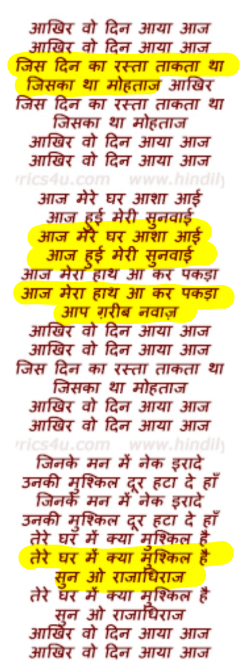

देवताओं की थी। यह खुशबू फैलती जायेगी। तुम खुशबू डालते जाते हो। ड्रामा प्लैन अनुसार लड़ाई के भी आसार सामने खड़े हैं। यह कोई नई बात नहीं है। भारत को 16 कला सम्पूर्ण जरूर बनना है। तुम जानते हो हम इस योगबल से 16 कला सम्पूर्ण बन रहे हैं। कहते हैं ना दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप भी कहते हैं विकारों का, अवगुणों का दान दो। यह रावण राज्य है ना। बाप आकर इनसे छुड़ाते हैं, इसमें भी काम विकार बड़ा भारी अवगुण है। तुम देह-अभिमानी बन पड़े हो। अब देही-अभिमानी बनना पड़े। शरीर का भी भान छोड़ना पड़े। इन बातों को तुम बच्चे ही समझते हो, दुनिया नहीं जानती। भारत जो 16 कला सम्पूर्ण था, सम्पूर्ण देवताओं का राज्य था। इन लक्ष्मी-नारायण की राजधानी थी। भारत स्वर्ग था। अब 5 विकारों का ग्रहण लगा हुआ है, इसलिए बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। यह काम विकार ही गिराने वाला है इसलिए बाप कहते हैं यह दान दो तो 16 कला सम्पन्न बन जायेंगे। नहीं देंगे तो नहीं बनेंगे। आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है ना। यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। तुम्हारी आत्मा में कितना पार्ट है। तुम विश्व का राज्य भाग्य

Refer last page
(some References of भगवत गीता)

Choice is All yours...
& Accordingly
It's Consequences

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

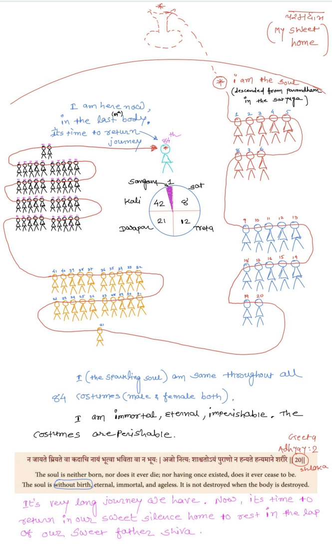

लेते हो। यह बेहद का ड्रामा है, अथाह एक्टर्स हैं। इसमें फर्स्टक्लास एक्टर्स हैं यह लक्ष्मी-नारायण, उन्हों का नम्बरवन पार्ट है। विष्णु सो ब्रह्मा सरस्वती फिर ब्रह्मा सरस्वती सो विष्णु बनते हैं। यह 84 जन्मों का चक्र कैसे लगाते हैं, वह सारा बुद्धि में आ जाता है। व्यापारी लोग चौपड़ा रखते हैं तो उस पर स्वास्तिका निकालते हैं। गणेश की पूजा करते हैं। यह है बेहद का चौपड़ा। स्वास्तिका में 4 भाग होते हैं। जैसे पुरी में चावल का हाण्डा रखते हैं। वह पक जाता है तो 4 भाग हो जाते हैं। वहाँ चावल का ही भोग लगता है। अभी तुम बच्चों को कौन पढ़ा रहे हैं? मोस्ट बील्वेड बाप आकर तुम्हारा सर्वेन्ट बना है, तुम्हारी सेवा करते हैं। मनुष्य तो कह देते आत्मा निर्लेप है। अभी तुम जानते हो - आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट है ही। उनको फिर निर्लेप कहना कितना रात-दिन का फर्क हो जाता है। जब यह कोई अच्छी रीति मास डेढ़ बैठ समझेंगे तब प्वाइंट्स बुद्धि में बैठेंगी। दिन- प्रतिदिन प्वाइंट्स बहुत निकलती रहती हैं। यह है जैसे कस्तूरी। शास्त्रों में तो कुछ भी सार नहीं है। बाबा कहते हैं वह अब बुद्धि से निकाल दो। ज्ञान सागर एक मैं ही हूँ। जब पूरा निश्चय बैठता है

जिसकी एक झलक मात्र पाने के लिए दुनिया वाले अपना शिर तक उतार कर रख देने को तैयार खड़े हैं।

वो विश्वनाथ तुम्हारे सामने सेवक बनकर उपस्थित है।
Please Value this invaluable Time
इसको साधारण नहीं समझो, नहीं तो अंत में खून के आंसू रोना पड़ेगा।

सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।
सारे संसार का सार हमें मिल गया है।

v/s

Point to be Noted

Only God can say this...

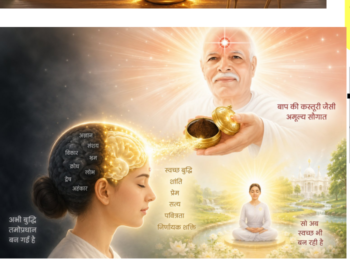

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Exclusive Authority of Shiv baba

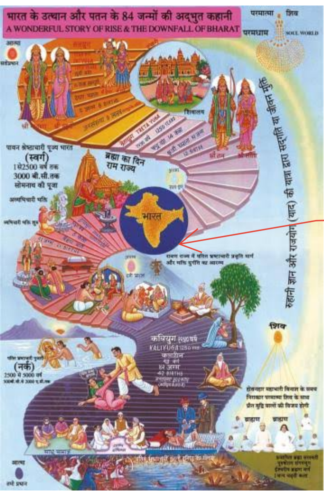

तो समझते हैं- बरोबर यह सब भक्तिमार्ग के लिए है। परमपिता परमात्मा ही आकर दुर्गति से सद्गति करते हैं। सीढ़ी पर भी क्लीयर दिखाना है। भक्ति मार्ग शुरू होता है तो रावण राज्य शुरू होता है। अभी गीता एपीसोड रिपीट हो रहा है। बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ। उन्होंने फिर कच्छ मच्छ अवतार कह दिया है। 24 अवतार कह देते हैं। बाबा कहते हैं अब तुम पर ब्रहस्पति की दशा है। मैंने तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया। अब रावण ने राहू की दशा बिठा दी है। अब फिर बाप आये हैं स्वर्ग का मालिक बनाने। तो अपने को घाटा नहीं डालना चाहिए। व्यापारी लोग अपना खाता हमेशा ठीक रखते हैं। घाटा डालने वाले को अनाड़ी कहा जाता है। अब तो यह सबसे बड़ा व्यापारी है। कोई विरला व्यापारी व्यापार करे। यही अविनाशी व्यापार है और व्यापार तो सब मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। अभी तुम्हारा सच्चा व्यापार हो रहा है। बाप है बेहद का सौदागर, रत्नागर... और ज्ञान का सागर कहा जाता है। प्रदर्शनी में देखो कितने आते हैं। सेन्टर में कोई मुश्किल आयेंगे। भारत तो बहुत लम्बा चौड़ा है ना। सब जगह तुमको जाना है। पानी की गंगायें तो

चढ़ाओ नशा...

Attention..!

Definition of

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥

Attention Please..!

सारे भारत में नहीं हैं। यह भी तुमको समझाना पड़े कि पानी की गंगा कोई पतित-पावनी नहीं है। तुम ज्ञान गंगाओं को जाना पड़ेगा। चारों तरफ प्रदर्शनी मेले करते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन चित्र भी अच्छे-अच्छे बनते रहेंगे। शोभनिक चित्र ऐसे हों जो देखने से ही खुशी आ जाए कि "यह तो ठीक समझाते हैं। अब लक्ष्मी-नारायण की राजधानी स्थापन हो रही है। अभी ब्राह्मण धर्म की स्थापना हो रही है। यह ब्राह्मण ही देवी-देवता बनते हैं।"

तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो तो दिल में अपने से पूछते रहो कि हमारे में कोई छोटा-मोटा काँटा तो नहीं है! काम का काँटा तो नहीं है! क्रोध का छोटा सा काँटा वह भी बहुत खराब है। देवतायें क्रोधी नहीं होते हैं। दिखाते हैं शंकर की आंख खुलने से विनाश हो जाता है। यह भी एक कलंक लगाया है। विनाश तो होना ही है। सूक्ष्मवतन में शंकर को कोई सर्प आदि थोड़ेही हो सकते हैं। वहाँ धरती ही कहाँ जो सर्प आदि निकलें। आसमान में थोड़ेही सर्प घूमेंगे।

As Certain as Death

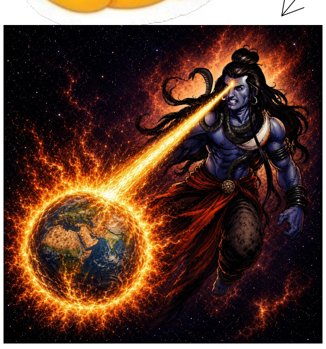

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुमसा हसीन बाबा कोई नहीं जहान में, तुमने हसीन बनाया हमको भी इस जहान में..

सूक्ष्मवतन और मूलवतन में बाग बगीचे सर्प आदि कुछ भी नहीं होते। यह सब यहाँ होते हैं। स्वर्ग भी यहाँ ही होता है। इस समय मनुष्य काँटे मिसल हैं, इसलिए इनको काँटों का जंगल कहा जाता है। v/s सतयुग है फूलों का बगीचा। तुम देखते हो बाबा कैसे बगीचा बनाते हैं। मोस्ट ब्युटीफुल बनाते हैं। सबको हसीन बनाते हैं। खुद तो एवर (Ever) हसीन (Beautiful) है। सब सजनियों को अर्थात् बच्चों को हसीन बनाते हैं। रावण ने बिल्कुल काला बना दिया है। अब तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए - हमारे ऊपर ब्रहस्पति की दशा बैठी है।

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

आधा समय दु:ख, आधा समय सुख हो, इससे फायदा ही क्या? नहीं, 3 हिस्सा सुख है।

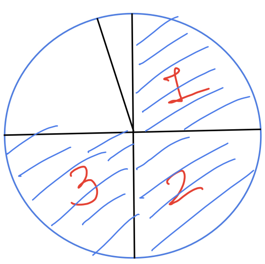

यह ड्रामा बना हुआ है। बहुत लोग पूछते हैं कि ड्रामा ऐसा क्यों बनाया है? अरे यह तो अनादि है ना। क्यों बना, यह प्रश्न उठ नहीं सकता। यह अनादि (No Begining) अविनाशी (No End) बना बनाया ड्रामा है। बनी बनाई बन रही... किसको मोक्ष नहीं मिल सकता। यह तो अनादि सृष्टि चली आती है, चलती रहेगी। प्रलय होती नहीं। बाबा नई दुनिया बनाते हैं, परन्तु इसमें गुंजाइस कितनी है। जब मनुष्य पतित दु:खी होते हैं तब ही बुलाते हैं। बाबा आकर सबकी काया

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

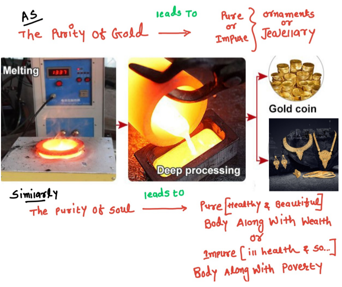

कल्पवृक्ष समान बनाते हैं। तुम्हारी आत्मा पवित्र बन जाती है तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। तो बाप तुम्हारी
Thank you so much मेरे मीठे बाबा...
काया कल्पतरू बनाते हैं। आधाकल्प कब तुम्हारी अकाले मृत्यु नहीं होगी। तुम काल पर जीत पाते हो। तुम बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। जितना ऊंच पद पायें उतना अच्छा है। पुरुषार्थ तो हर एक जास्ती कमाई के लिए करते हैं। लकड़ी वाले भी कहेंगे हम जास्ती लकड़ी ले जायें तो जास्ती कमाई होगी। कोई तो ठगी से भी कमाई करते हैं। वहाँ ऐसे कोई दु:ख की बात नहीं होती। अब तुम बाप से कितना वर्सा लेते हो। अपनी जांच करनी चाहिए कि हम स्वर्ग में जाने लायक हैं? (नारद का मिसाल) शास्त्रों में तो बहुत बातें लिख दी हैं। यह तीर्थ यात्रा आदि सब छोड़ो। गीत भी है ना - चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी... अब बाप तुमको कितनी अच्छी यात्रा सिखलाते हैं, इसमें कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।
हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...
बहुत अच्छी युक्ति तुमको सुनाता हूँ। बच्चे सुनते हो! यह मेरा लोन लिया हुआ रथ है। इस (ब्रह्मा) बाप को कितनी खुशी होती है। हमने बाप को अपना शरीर लोन में दिया है। बाप हमको विश्व का मालिक बनाते

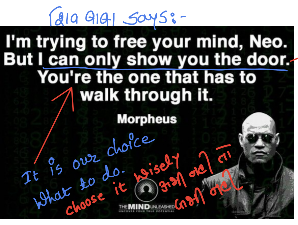

Simple Logic

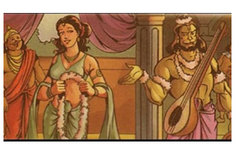

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

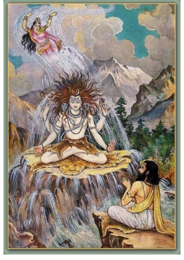

Bhagiratha bringing river Ganges from heaven upon the earth

Coming soon... Are you ready?

हैं। नाम भी है भागीरथ। तुम जानते हो बॉम्बस आदि तैयार हो रहे हैं। आग लगनी है। रावण का बुत भी बनाते हैं, मारने लिए। यहाँ मारने आदि की तो बात नहीं। कहाँ मारने आदि की बात, कहाँ यह रावणपुरी खत्म हो रही है। तुम बच्चे रामपुरी में चलने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। तो पूरा पुरुषार्थ करना है, काँटा नहीं बनना है।

May I have your Attention Please..!

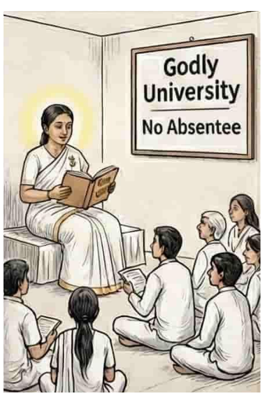

तुम ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ हो। सबका आधार मुरली पर है। मुरली तुमको नहीं मिलेगी तो तुम क्या करेंगे। ऐसे नहीं कि सिर्फ एक ब्राह्मणी को ही मुरली सुनानी है। कोई भी मुरली पढ़कर सुना सकते हैं। बोलना चाहिए - आज तुम सुनाओ। अब तो समझाने के लिए चित्र भी अच्छे बने हैं। यह मुख्य चित्र तो अपनी दुकान में रख बहुतों का कल्याण करो। उस सौदे के साथ-साथ यह सौदा भी करो। यह बाबा के अविनाशी ज्ञान रत्नों का दुकान है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं कि मकान आदि नहीं बनाओ। भल बनाओ। पैसा तो मिट्टी में मिल जायेगा। इससे क्यों

but, Take dicision wisely

नहीं मकान बनाकर आराम से रहो। पैसे काम में लगाने चाहिए। मकान भी बनाओ, खाने के लिए भी रखो, दान-पुण्य भी करो। कश्मीर का राजा मरा तो अपनी प्राइवेट प्रॉपर्टी जो थी वह सब आर्य समाजियों को दान में दे गया। अपने धर्म के लिए करते हैं ना। यहाँ तो वह कोई बात नहीं। सब बच्चे हैं, दान आदि की बात नहीं। वह है हद का दान। मैं तो तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ। ड्रामा अनुसार भारतवासी ही राज्य भाग्य लेंगे। भक्ति मार्ग में व्यापारी लोग कुछ न कुछ धर्माऊ जरूर निकालते हैं। उसका भी दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए मिलता है। अब तो मैं डायरेक्ट आया हूँ तो तुम इस कार्य में लगाओ। मुझे तो कुछ नहीं चाहिए। शिवबाबा को अपने लिए मकान बनाना है क्या! यह सब ब्राह्मणों का है। गरीब, साहूकार सब इकट्ठे रहते हैं। तो यह सब बच्चों का ही है। देखा जाता है घर में यह कैसे आराम से रहते हैं, तो वह प्रबन्ध देना पड़े इसलिए कहते हैं सबकी खातिरी करो। कोई चीज़ न हो तो मिल सकती है। बाप को तो बच्चों पर लव रहता है। इतना लव और कोई का रह नहीं सकता। बच्चों को कितना समझाते हैं - पुरुषार्थ करो औरों

के लिए भी युक्ति रचो। इसमें चाहिए सिर्फ 3 पैर पृथ्वी, जिसमें बच्चियाँ समझाती रहें। कोई बड़े आदमी का हॉल हो, बोलो हम जरूरी चित्र रख देते हैं। एक दो घण्टा सुबह शाम क्लास करके चले जायेंगे। खर्चा सब हमारा, नाम तुम्हारा होगा। बहुत आकर कौड़ी से हीरे जैसा बनेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अविनाशी बाप से सच्चा-सच्चा अविनाशी व्यापार करना है। उस सौदे के साथ इस सौदे में भी समय देना है। ज्ञान गंगा बन सबको पावन बनाना है।

ये तो पक्का कर लो..

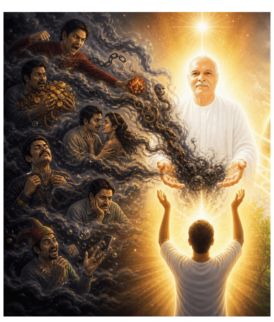

2) ब्राह्मण जीवन का आधार मुरली है जो प्यार से सुननी और सुनानी है। अन्दर कोई भी काँटा हो तो उसे निकाल देना है। अवगुणों का दान करना है।

किसी भी प्रकार की कमजोरी होगी तो माया आयेगी।
जैसे कमजोरी से अनेक बीमारियों के जर्मस पैदा हो जाते हैं।
ऐसे आत्मा की कमजोरी से माया को जन्म मिल जाता है।
कारण है - अपनी कमजोरी, और उसका निवारण है - रोज की मुरली।

मुरली ही ताजा भोजन है, शक्तिशाली भोजन है। जो भी शक्तियाँ चाहिए, उन सबसे सम्पन्न रोज का भोजन मिलता है।
जो रोज शक्तिशाली भोजन ग्रहण करता है वह कमजोर हो नहीं सकता। रोज यह भोजन तो खाते हो न, उस भोजन का व्रत रखने की जरूरत नहीं। रोज ऐसे शक्तिशाली भोजन मिलने से मास्टर सर्वशक्तिवान रहेंगे।

भोजन के साथ-साथ भोजन को हजम करने की भी शक्ति चाहिए।
अगर सिर्फ सुनने की शक्ति है, मनन करने की शक्ति नहीं, तो भी शक्तिशाली नहीं बन सकते।
सुनने की शक्ति अर्थात् भोजन खाया और मनन शक्ति अर्थात् भोजन को हजम किया। दोनों शक्ति वाले कमजोर नहीं हो सकते।

AV 14/10/81

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

05-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- रहमदिल की भावना द्वारा अपकारी पर भी उपकार करने वाले शुभचिंतक भव

कैसी भी कोई आत्मा, चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सम्पर्क में आये लेकिन सभी के प्रति शुभचिंतक अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करने वाले।

कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि न हो क्योंकि जानते हो यह अज्ञान के वशीभूत है, बेसमझ है। उनके ऊपर रहम वा स्नेह आये, घृणा नहीं।

शुभचिंतक आत्मा ऐसा नहीं सोचेगी कि इसने ऐसा क्यों किया लेकिन इस आत्मा का कल्याण कैसे हो - यही है शुभचिंतक स्टेज।

स्लोगन:- तपस्या के बल से असम्भव को सम्भव कर सफलता मूर्त बनो।

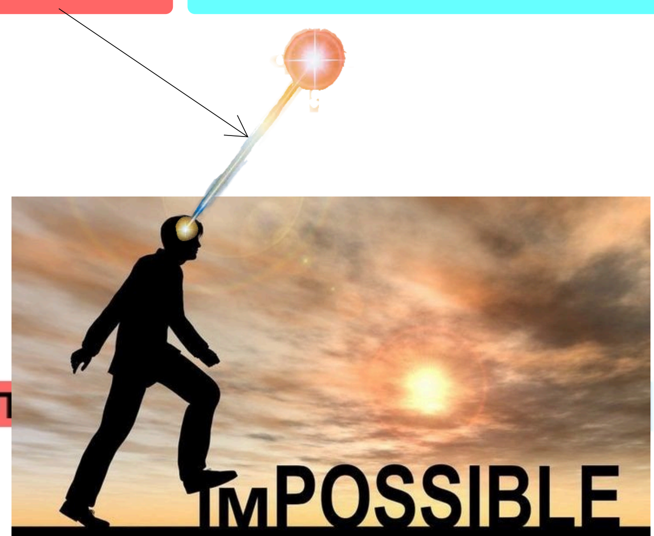

Points: ज्ञान योग

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

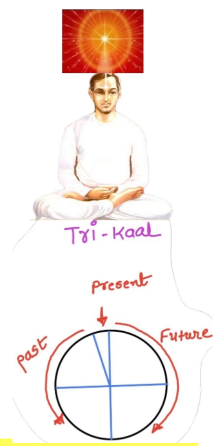

Characteristics of परोपकारी

वह त्रिकालदर्शी होने के कारण (1) आत्मा के सम्पूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, (2) हर आत्मा की कमज़ोरी को परखते हुए उसकी कमज़ोरी को स्वयं में धारण नहीं करेगा, वर्णन नहीं करेगा लेकिन अन्य आत्माओं की कमज़ोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देगा।

कांटे के बजाए - कांटे को भी फूल बना देगा।

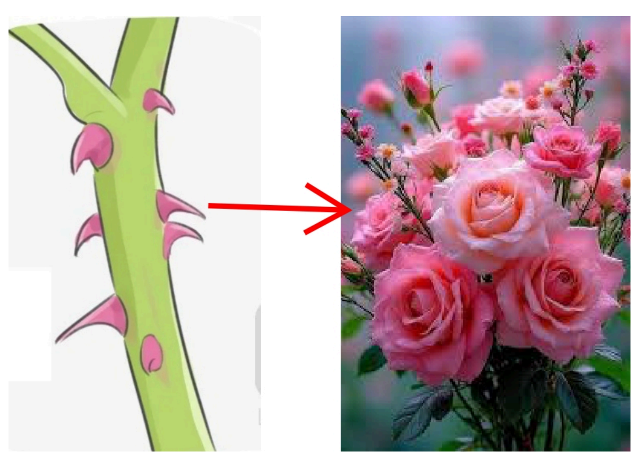

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(ए) मीठे बच्चे, दिन में भल काम करो, परन्तु अमृतवेले 4 से 5 बजे तक बैठ कर याद करो, तो बहुत **सुख फील होगा।** मनसा, वाचा, कर्मणा सबको सुख देने का ही पुरुषार्थ करना है। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए **अमृतवेले विशेष एकान्तवासी बनो।** रूहानी कमाई वाले बच्चे शरीर निर्वाह करते हुए भी सुबह उठ कर बहुत-बहुत प्यार से बाप को याद करेंगे। **आत्मा उड़ती रहेगी** और बाप समान रहमदिल बन अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम करेंगी। सबको बाप का परिचय देंगे। नये-नये बहुत ऐसे भी निकलेंगे जो पुरानों से भी तीखे जायेंगे। मार्जिन है। अमृतवेले याद में बैठने की आदत पड़ जाये, तो बड़ा मजा आयेगा।

(ऐ) बाप ने समझाया है **खुशी का पारा चढ़ेगा अमृतवेले।** दिन और रात को वायुमण्डल बहुत गन्दा रहता है, उस समय याद मुश्किल रहती है। अमृतवेले का समय गाया हुआ है। उसी समय सभी आत्मायें थक कर, शरीर से डिटैच होकर

सो जाती हैं। वह है शुभ-मुहूर्त। ऋषि-मुनि, भक्त लोग भी अमृतवेले उठ कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि उस समय शुद्ध वायुमण्डल रहता है। इसलिए अमृतवेले के शुभ-मुहूर्त में बाप को बहुत प्यार से याद कर, खुशी का पारा चढ़ाना चाहिए। चलते-फिरते भी याद का अभ्यास करना है। सवेरे उठ कर याद करने से उसका **नशा फिर सारा दिन रहेगा।**

(ओ) बाबा कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो और विचार सागर मंथन के लिए अमृतवेले का टाइम अच्छा है। **विचार सागर मंथन करने से मक्खन अच्छा निकलता है।** विचार सागर मंथन करना है कि भगवान का परिचय सबको कैसे दें?

(औ) मीठे बच्चे, अमृतवेला **विशेष प्रभु-पालना की वेला है।** इसका महत्व जान, पूरा लाभ लो। कहाँ भी मूँझो तो बाप से पूछो। तार में, चिट्ठी में अथवा फोन पर पूछ सकते हो। फोन सवेरे-सवेरे झट मिल सकता है क्योंकि उस समय सिवाय तुम्हारे, बाकी सब सोये रहते हैं। बाप श्रीमत देते हैं — मीठे बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप की याद में बैठो, तो पूरा वर्सा मिलेगा।

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है ?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

Formidable Enemy

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

~~०~~

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar